## प्रधानमंत्री ने कहा...

- पेज 1 का शेष

विश्व में भविष्य के संकट के रूप में देखा जा रहा है। 21वीं सदी में दुनिया इस बात की गंभीरता को समझ रही है कि हमारी धरती के पास जल संसाधन कितने सीमित हैं। इतनी बड़ी आबादी के कारण जल सुरक्षा भारत के लिए भी एक महत्वपूर्ण दायित्व है। उन्होंने कहा कि हम जल को देव की संज्ञा देते हैं, नदियों को माँ मानते हैं। जब कोई समाज प्रकृति से भावनात्मक सम्बन्ध जोड़ लेता है, तो वह उसकी सहज जीवन शैली बन जाती है। हमारे देश में जल जैसे कार्य का नेतृत्व माताओं के हाथों में रहा है। इस दिशा में अब ब्रह्माकुमारी बहनें भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाने जा रही हैं।

अभियान के शुभारंभ पर प्रधानमंत्री मोदी सहित अन्य अतिथियों के सामने राजस्थान के प्रदेश भर से पहुंचे दस हज़ार से अधिक लोगों ने जल संरक्षण की शपथ ली। साथ ही अन्य लोगों को भी इसे लेकर जागरुक करने का संकल्प किया। कार्यक्रम में संस्थान की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. जयंती दीदी, कार्यकारी सचिव ब्र.कु. मृत्युंजय भाई, ब्र.कु. चन्द्रकला दीदी समेत कई लोगों ने अपने विचार व्यक्त किये। संस्थान की संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. मुन्नी दीदी ने अतिथियों को सम्मानित किया।

### जल-जन अभियान के उद्घाटन कार्यक्रम में...

**प्रधानमंत्री मोदी, केंद्रीय मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत, मेवाड़ के महाराज कुमार लक्ष्यराज सिंह मेवाड़, सुप्रसिद्ध अभिनेता नाना पाटेकर, प्रसिद्ध कवि एवं लेखक मनोज मुंतशिर सहित अनेक गणमान्य हस्तियां हुईं शामिल**

डायमण्ड सभागार में उपस्थित देश-विदेश से आये 15 हज़ार लोगों ने पानी बचाने एवं सभी को इसके प्रति जागरुक करने का लिया संकल्प

## 'रोटी, कपड़ा और मकान' में जोड़ लें 'पानी' : मनोज मुंतशिर

मुम्बई से आये प्रसिद्ध कवि व लेखक मनोज मुंतशिर शुक्ला ने कहा कि हम बचपन से सुनते आये हैं कि जीवन के लिए कपड़ा, रोटी और मकान ज़रूरी है। लेकिन वर्तमान में इसमें एक शब्द और जोड़ने की ज़रूरत है, वह है पानी। पानी के बिना जीवन अधूरा है। यदि हम ज़रूरत से ज़्यादा पानी का उपयोग कर रहे हैं तो यकीन मानिए हम किसी और के हिस्से के पानी को बहा रहे हैं। पूरे संसार को पेयजल योग्य मात्र 0.5 फीसदी पानी ही उपलब्ध है। हमने आज इसकी कीमत नहीं समझी तो बड़ा मूल्य चुकाना पड़ेगा। उन्होंने कहा कि हमें अब फौजी की तरह पानी बचाने के लिए लड़ना होगा। जब संसार में एक तरफ पानी खत्म होगा तो ज़िंदगी खत्म होना तय है।

राजयोगिनी ब्र.कु. उषा बहन, वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका

व्यर्थ विचारों के तूफान को कैसे लगायें फुलस्टॉप...!!!

# ड्रामा में जितना निश्चय उतनी निश्चिंतता अर्थात् फुलस्टॉप

- गतांक से आगे...

देखा गया है कि व्यर्थ इसलिए चलता है क्योंकि हमारा पुण्य क्षीण हो गया है। इसलिए पुण्य करना ज़रूरी है। तो जितना कर्मणा सेवा हम करेंगे उतना कर्मणा सेवा करते-करते हमारा पुण्य अर्जित होना स्वाभाविक हो जाता है। जैसे-जैसे हम पुण्य अर्जित करेंगे हमारे खाते में जैसे-जैसे आता जायेगा, जमा होता जायेगा तो खुशी बढ़ने लगेगी। हर घड़ी उत्सव मनाओ। हर घड़ी उत्साह में रहो। उसमें कितनी अच्छी बात बाबा ने कही कि जब आप उत्साह में रहते हो तो परिस्थिति आपके ऊपर वार नहीं कर सकती। बहुत गहराई की बात है कि कैसे परिस्थिति वार नहीं करती है! जब हम उत्साह में होते हैं अर्थात् हमारी फुल स्पिरिट होती है। एक हाई एनर्जी अपने अंदर होती है। जब हाई एनर्जी अंदर में है तो परिस्थिति जब आती है तो वो लॉ एनर्जी, हाई एनर्जी को इफेक्ट नहीं करती, इसलिए कर्मणा सेवा करते हुए हम अपने जमा के खाते को बढ़ायें। बाबा ने तीनों के मार्क्स को एक समान रखा है, बराबर रखा है- मन्सा-वाचा-कर्मणा। ये नहीं कर्मणा का कम है या मन्सा का अधिक है या वाचा का अधिक है, नहीं। उस समय मन्सा सेवा तो संभव नहीं है। जब व्यर्थ इतना चल रहा होता है तो तब हम कोई भी कर्मणा सेवा शुरू करते हैं और हमारा मन जब उसमें पिरोना शुरू होता है तो क्या होगा? अपने आप वो व्यर्थ समाप्त होगा। तो ये है फुलस्टॉप लगाने का पहला तरीका,मन को एक दिशा दो। अपने मन-वचन-कर्म को एक दिशा देना है।

**जब हम उत्साह में होते हैं अर्थात् हमारी फुल स्पिरिट होती है। एक हाई एनर्जी अपने अंदर होती है। जब हाई एनर्जी अंदर में है तो परिस्थिति जब आती है तो वो लॉ एनर्जी, हाई एनर्जी को इफेक्ट नहीं करती, इसलिए कर्मणा सेवा करते हुए हम अपने जमा के खाते को बढ़ायें।**

दूसरी बात, फुलस्टॉप लगाना माना निश्चयबुद्धि बनना। किसमें निश्चयबुद्धि बनना है? ड्रामा। ड्रामा में हमारा जितना निश्चय हो और वो भी निश्चय क्या होना चाहिए? जो हो रहा है वो भी अच्छा, जो हुआ वो भी बहुत अच्छा, जो होने वाला है वो तो सबसे अच्छा, तो निश्चिंत हो जाना। तो फुलस्टॉप लगाना माना निश्चिंतता का अनुभव करना। जब समय कल्याणकारी है, बाप कल्याणकारी है, ड्रामा कल्याणकारी है तो हमारा अकल्याण करने की ताकत किसमें है? है किसमें? जब ये निश्चय हो जाता है तो भी एक सेकण्ड के अंदर फुलस्टॉप लग जाता है। तो मुख्य बात यही है कि या तो परिवर्तन करने की शक्ति हमारे अंदर आ जाये या दूसरी निश्चयबुद्धि बनकर निश्चिंत हो जाना कि कल्याण हुआ ही पड़ा है। "वाह-वाह" के गीत गाना शुरू करें। "वाह बाबा, वाह ड्रामा वाह, वाह रे मेरा भाग्य वाह!" तो जितना "वाह-वाह" के गीत गाते हैं उतना माना अपनी स्पिरिट को हाई करते हैं।

बाबा कहते हैं कि अगर "वाह-वाह" नहीं भी होगा तो परिवर्तन होकर "वाह-वाह" हो जायेगा। ये भगवान का वरदान है इसलिए "वाह-वाह" के गीत ज़रूर गाना चाहिए। इसको कहते हैं फुलस्टॉप। कोई गाना गाता है तो अपने आप सारी दुनिया भुला हुआ है, है कि नहीं! उस गाने में वो कितना मग्न हो जाता है। जो सारी दुनिया भूल जाती है। ठीक इसी तरह जब हम भी "वाह-वाह" के गीत गायेंगे तो दूसरा सब भूल जायेंगे। तो व्यर्थ समाप्त हो जायेगा और "वाह-वाह" से हर चीज़ "वाह-वाह" होने लगेंगी। तो निगेटिव को कमप्लीट हम पॉज़िटिव में चेंज कर दें। तो ये दूसरा तरीका है फुलस्टॉप लगाने का। फिर देखो कैसे परिवर्तन होता है!


### ओमशान्ति मीडिया सदस्यता हेतु सम्पर्क करें

कार्यालय - ओमशान्ति मीडिया
संपादक - ब्र.कु. गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज़, शान्तिवन, तलहटी, पोस्ट बॉक्स न-5,आबू रोड, राज. 307510

सम्पर्क- M- 9414006096, 9414182088,
Email-omshantimedia@bkivv.org

सदस्यता शुल्क : भारत - वार्षिक - 240 रुपये, तीन वर्ष - 720 रुपये, आजीवन - 6000 रुपये

Website: www.omshantimedia.org

**For Online Transfer**

BANK NAME:- STATE BANK OF INDIA(SBI)
ACCOUNT NAME:- OM SHANTI MEDIA
ACCOUNT NO: - 30826907041,IFSC - CODE - SBIN0010638
BRANCH- Prajapita Brahmakumaris Ishwariya Vishwa Vidhyalya,Shantivan

Note:- AfterTransfer send detail on
E-Mail - omshantimedia.acct@bkivv.org
OR
Whatsapp, Telegram No.:- 9414172087